Step-by-Step हिंदी गाइड

GST रजिस्ट्रेशन खुद करें 2026

छोटे व्यापारियों के लिए आवेदन, GSTIN, बिल और रिटर्न की आसान हिंदी गाइड

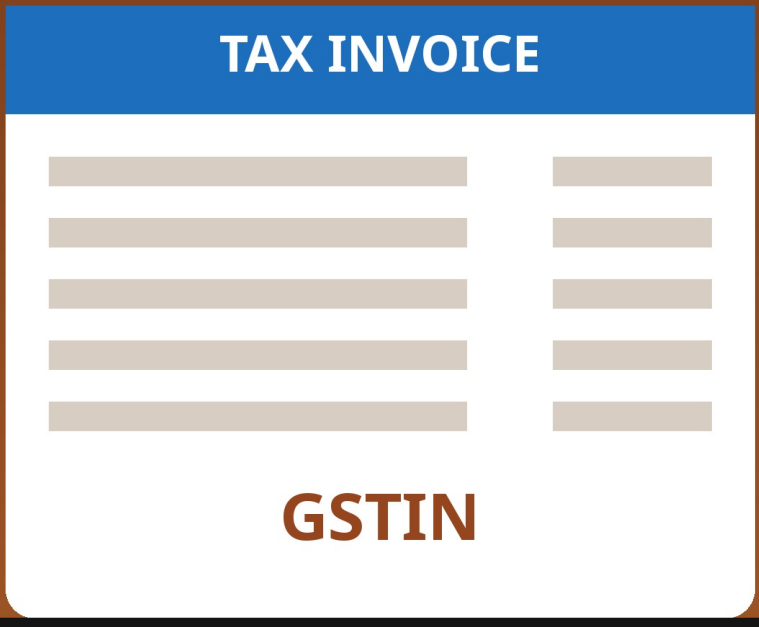

Anoop Gupta

GST रजिस्ट्रेशन खुद करें — 2026 की आसान हिंदी गाइड

GSTIN, GST Portal, Registration, Returns और Input Tax Credit को आसान भाषा में समझें

लेखक: Anoop Gupta

कॉपीराइट

© 2026 Anoop Gupta। सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित, संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता, सिवाय समीक्षा में छोटे उद्धरणों के।

प्रथम संस्करण: 2026

Independently published

अस्वीकरण

यह पुस्तक केवल सामान्य जानकारी और शिक्षा के उद्देश्य से लिखी गई है। यह कानूनी, कर या वित्तीय सलाह नहीं है। GST कानून, दरें, सीमाएँ, फॉर्म और Due Dates समय-समय पर बदलते रहते हैं; कोई भी Filing या निर्णय लेने से पहले gst.gov.in, cbic-gst.gov.in और नवीनतम अधिसूचनाओं से जानकारी अवश्य जाँचें, और आवश्यकता होने पर किसी योग्य Chartered Accountant या Tax Practitioner से सलाह लें। पुस्तक में दिए गए सभी व्यक्ति, व्यवसाय और आँकड़े काल्पनिक उदाहरण हैं। सभी उदाहरणों के नाम, आँकड़े और घटनाएँ काल्पनिक हैं।

इस किताब का उपयोग कैसे करें

हर अध्याय को क्रम से पढ़ें, साथ में GST Portal खुला रखें और अध्याय के अंत की Checklist पर निशान लगाते चलें। तालिकाएँ और आरेख त्वरित संदर्भ के लिए हैं। अपने व्यवसाय पर लागू नियम हमेशा आधिकारिक पोर्टल पर दोबारा जाँचें।

विषय-सूची

- अध्याय 1: GST क्या है और भारत में कैसे काम करता है?
- अध्याय 2: GST Registration किसे और कब कराना चाहिए?
- अध्याय 3: GST Registration के लिए जरूरी Documents
- अध्याय 4: GST Portal पर नया Registration कैसे करें
- अध्याय 5: GST Registration Form भरते समय होने वाली गलतियाँ
- अध्याय 6: GSTIN मिलने के बाद क्या करें?
- अध्याय 7: GST Tax Invoice और Billing की पूरी प्रक्रिया
- अध्याय 8: GSTR-1 क्या है और इसे कैसे भरें?
- अध्याय 9: GSTR-3B क्या है और GST Payment कैसे करें?
- अध्याय 10: GSTR-2B और Input Tax Credit Reconciliation
- अध्याय 11: GST में Input Tax Credit के नियम और सामान्य गलतियाँ
- अध्याय 12: GST में Nil Return, Late Fee और Interest
- अध्याय 13: GST Registration में Amendment, Cancellation और Revocation
- अध्याय 14: GST Composition Scheme क्या है और किसके लिए सही है
- अध्याय 15: GST में Reverse Charge Mechanism (RCM)
- अध्याय 16: GST में Credit Note, Debit Note और Purchase Return
- अध्याय 17: GST में E-Way Bill क्या है और कैसे बनाएँ?
- अध्याय 18: GST में Export, Import और LUT
- अध्याय 19: GST Audit, Notices और Departmental Verification
- अध्याय 20: GST में Refund कैसे Claim करें?
- अध्याय 21: GST में Common Errors, Portal Problems और उनका समाधान
- अध्याय 22: GST Accounting और Excel में Reconciliation
- अध्याय 23: GST में E-Commerce, Amazon, Flipkart और Online Sellers के नियम
- अध्याय 24: GST में Job Work, Manufacturing और Stock Transfer

- अध्याय 25: GST में Business Closure, Registration Cancellation और Final Return
- अध्याय 26: GST की पूरी Compliance Calendar और साल भर का Practical Workflow
- अध्याय 27: GST Practical Case Studies — Sales, Purchase, ITC और Tax Payment का पूरा हिसाब
- अध्याय 28: Freelancers, Consultants और Service Providers के GST नियम
- अध्याय 29: GST में TDS, TCS और Reverse Charge का Practical Accounting
- अध्याय 30: GST Master Revision — Forms, Sections, Due Dates और Interview Questions

अध्याय 1: GST क्या है और भारत में कैसे काम करता है?

1.1 GST का पूरा नाम क्या है?

GST का पूरा नाम Goods and Services Tax (वस्तु एवं सेवा कर) है। भारत में यह वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति पर लागू होने वाला अप्रत्यक्ष कर है।

सरल भाषा में समझें: जब कोई व्यवसाय GST के दायरे में आने वाली वस्तु या सेवा बेचता है, तो लागू नियमों और दरों के अनुसार GST लग सकता है। व्यवसाय उस कर को ग्राहक से प्राप्त करके सरकार के पास जमा करता है, जहाँ लागू नियमों के अनुसार Input Tax Credit (ITC) का लाभ भी मिल सकता है।

उदाहरण के लिए, एक दुकानदार GST के अधीन आने वाला सामान बेचता है। उसके बिल में सामान की कीमत और लागू GST अलग-अलग दिखाए जा सकते हैं। दुकानदार को अपने GST Return और Tax Liability की गणना निर्धारित नियमों के अनुसार करनी होती है।

ध्यान दें: हर वस्तु या सेवा पर एक जैसी GST दर नहीं लगती। कुछ वस्तुओं और सेवाओं पर अलग दरें हो सकती हैं, कुछ पर छूट हो सकती है और कुछ आपूर्तियाँ GST के दायरे से बाहर या विशेष नियमों के अधीन हो सकती हैं।

1.2 GST लागू करने की जरूरत क्यों पड़ी?

GST लागू होने से पहले भारत में कई प्रकार के अप्रत्यक्ष कर अलग-अलग स्तरों पर लगाए जाते थे। GST व्यवस्था का उद्देश्य वस्तुओं और सेवाओं पर लागू अप्रत्यक्ष करों को एक व्यापक प्रणाली में लाना था।

GST व्यवस्था के प्रमुख उद्देश्य हैं:

- वस्तुओं और सेवाओं पर कर लगाने की प्रक्रिया को अधिक व्यवस्थित बनाना।
- पात्र व्यवसायों को निर्धारित नियमों के अनुसार Input Tax Credit देना।
- देशभर में कर अनुपालन के लिए एक साझा ढाँचा उपलब्ध कराना।

- GST Registration, Returns और Payments के लिए ऑनलाइन प्रणाली उपलब्ध कराना।
- खरीद और बिक्री से संबंधित कर रिकॉर्ड को बेहतर तरीके से व्यवस्थित करना।

GST लागू होने के बाद भी अलग-अलग राज्यों, वस्तुओं, सेवाओं और व्यापारिक परिस्थितियों के अनुसार नियमों में अंतर हो सकता है। इसलिए हर व्यवसाय के लिए लागू प्रावधानों की जाँच जरूरी है।

1.3 GST के मुख्य प्रकार कौन-से हैं?

भारत में GST के प्रमुख प्रकार CGST, SGST, UTGST और IGST हैं।

CGST — Central Goods and Services Tax

यह केंद्र सरकार के हिस्से का GST है। सामान्यतः राज्य के भीतर होने वाली कर योग्य आपूर्ति पर SGST के साथ लगाया जाता है।

SGST — State Goods and Services Tax

यह संबंधित राज्य सरकार के हिस्से का GST है। राज्य के भीतर होने वाली सामान्य कर योग्य आपूर्ति पर CGST के साथ लागू हो सकता है।

IGST — Integrated Goods and Services Tax

यह सामान्यतः अंतरराज्यीय कर योग्य आपूर्ति पर लागू होता है। आयात और कुछ अन्य परिस्थितियों में भी विशेष नियम लागू होते हैं।

UTGST — Union Territory Goods and Services Tax

कुछ केंद्र शासित प्रदेशों में, जहाँ लागू व्यवस्था के अनुसार SGST के स्थान पर UTGST लगता है, यह केंद्र सरकार के हिस्से के कर के रूप में लागू होता है।

एक उदाहरण से समझें

मान लीजिए किसी कर योग्य वस्तु की कीमत GST से पहले ₹10,000 है और उदाहरण के लिए लागू GST दर 18% है।

विवरण	राशि
वस्तु की कीमत	₹10,000
GST दर	18%
कुल GST	₹1,800
ग्राहक से कुल राशि	₹11,800

यह उदाहरण मानता है कि GST वस्तु की पूरी कीमत पर लागू है और कोई अतिरिक्त शुल्क या छूट नहीं है। 18% केवल गणना समझाने के लिए लिया गया उदाहरण है।

यदि यह राज्य के भीतर होने वाली सामान्य कर योग्य आपूर्ति है और CGST तथा SGST लागू हैं, तो उदाहरण में:

- CGST 9% = ₹900
- SGST 9% = ₹900

यदि यह अंतरराज्यीय आपूर्ति है और IGST 18% लागू होता है, तो:

- - IGST 18% = ₹1,800

किसी वास्तविक बिल में दर और कर का प्रकार वस्तु या सेवा, आपूर्ति के स्थान और लागू नियमों के आधार पर तय किया जाना चाहिए।

1.4 GSTIN क्या होता है?

GSTIN का पूरा नाम Goods and Services Tax Identification Number है। यह GST के तहत पंजीकृत व्यवसाय को दिया जाने वाला पहचान नंबर है।

भारत में GSTIN सामान्यतः 15 अक्षरों और अंकों का होता है।

उदाहरण के लिए, नीचे दिया गया नंबर केवल संरचना समझाने के लिए काल्पनिक है:

- 07ABCDE1234F1Z5

GSTIN के हिस्सों को सामान्य रूप से इस प्रकार समझ सकते हैं:

हिस्सा	अर्थ
पहले 2 अंक	राज्य या केंद्र शासित प्रदेश का कोड
अगले 10 अक्षर/अंक	PAN
13वाँ अक्षर/अंक	उसी PAN के अंतर्गत उस राज्य में Registration का क्रम
14वाँ अक्षर	सामान्य GSTIN संरचना में प्रायः Z
15वाँ अक्षर/अंक	Check Code

GSTIN का उपयोग GST Returns, Tax Invoices और अन्य संबंधित प्रक्रियाओं में होता है। किसी व्यवसाय का GSTIN वास्तविक है या नहीं, यह आधिकारिक GST Portal पर जाँचना चाहिए।

1.5 क्या हर दुकानदार को GST Registration कराना जरूरी है?

नहीं। GST Registration की आवश्यकता व्यवसाय के प्रकार, कुल कारोबार, राज्य, वस्तु या सेवा और लागू विशेष प्रावधानों पर निर्भर करती है।

Registration से संबंधित नियमों में निम्न बातें महत्वपूर्ण हो सकती हैं:

- कुल Aggregate Turnover।
- व्यवसाय किस राज्य में स्थित है।
- वस्तुओं की आपूर्ति होती है या सेवाओं की।
- व्यवसाय केवल राज्य के भीतर काम करता है या अंतरराज्यीय आपूर्ति भी करता है।
- ई-कॉमर्स के माध्यम से बिक्री होती है या नहीं।
- क्या किसी विशेष श्रेणी के व्यक्ति या व्यवसाय पर अनिवार्य Registration के नियम लागू होते हैं।

- क्या व्यवसाय किसी छूट या विशेष योजना के अंतर्गत आता है।

महत्वपूर्ण: सिर्फ इतना जानना कि कारोबार किसी निश्चित राशि से कम है, Registration की जरूरत तय करने के लिए हमेशा पर्याप्त नहीं है। कुछ परिस्थितियों में विशेष नियम लागू हो सकते हैं। इसलिए Registration कराने से पहले अपने व्यवसाय की स्थिति के अनुसार नियम जाँचें।

1.6 Input Tax Credit (ITC) क्या है?

Input Tax Credit का अर्थ है पात्र खरीद पर दिए गए GST का क्रेडिट, जिसे लागू नियमों के अनुसार बिक्री पर देय GST के विरुद्ध इस्तेमाल किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए:

- बिक्री पर देय GST: ₹5,000
- पात्र खरीद पर उपलब्ध ITC: ₹2,000
- अन्य समायोजन न मानते हुए शेष कर देयता: ₹3,000

यह केवल गणना समझाने का उदाहरण है। वास्तविक ITC तभी लिया जा सकता है जब संबंधित कानूनी शर्तें पूरी हों। केवल खरीद बिल होना हर स्थिति में ITC का अधिकार सुनिश्चित नहीं करता।

ITC से संबंधित विस्तृत चर्चा हम आगे के अध्यायों में करेंगे, जहाँ Purchase Register, GSTR-2B Reconciliation और GST Set-off को उदाहरणों के साथ समझेंगे।

ITC कैसे काम करता है (काल्पनिक आँकड़े)

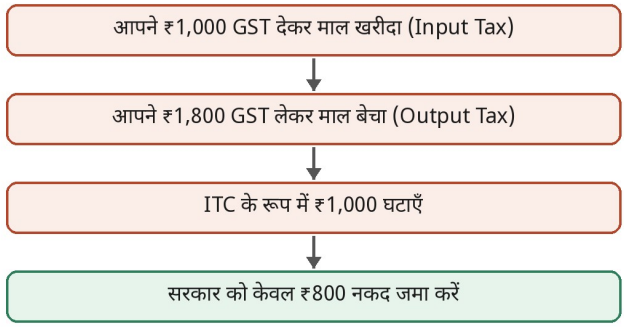

चित्र 1.1: ITC कैसे काम करता है (काल्पनिक आँकड़े)

1.7 GST Portal क्या है?

GST Portal वह आधिकारिक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है जहाँ GST से संबंधित कई प्रक्रियाएँ की जाती हैं।

वेबसाइट/पोर्टल: आधिकारिक GST Portal

इस पोर्टल पर उपलब्ध सुविधाओं में सामान्यतः ये कार्य शामिल होते हैं:

- GST Registration के लिए आवेदन।
- GSTIN से संबंधित जानकारी देखना।
- GST Returns दाखिल करना।
- GST Tax Payment और संबंधित रिकॉर्ड देखना।
- उपलब्ध Notices या आदेशों की जानकारी देखना।
- Registration से संबंधित कुछ बदलावों के लिए आवेदन करना।

किसी भी वास्तविक आवेदन या भुगतान के लिए केवल आधिकारिक पोर्टल का इस्तेमाल करें। OTP, Password या अन्य संवेदनशील जानकारी किसी अनजान व्यक्ति के साथ साझा न करें।

1.8 GST और Accounts Executive का क्या संबंध है?

यदि आप Accounts या Accounting Software में काम करते हैं, तो GST की समझ कई कार्यों में उपयोगी होती है।

उदाहरण के लिए:

- Sales Invoice में GST की सही दर और विवरण दर्ज करना।
- Purchase Bills की जाँच करना।
- Purchase Register और GSTR-2B की तुलना करना।
- पात्र ITC का मिलान करना।
- GST Returns के लिए आवश्यक डेटा तैयार करना।
- GST Liability और उपलब्ध क्रेडिट की गणना में सहायता करना।
- Tally Prime या SAP Business One में संबंधित Accounting Entries दर्ज करना।

हालाँकि, Accounting Software में सही Entry करने के लिए GST के मूल नियम समझना आवश्यक है। केवल Software में Tax Code चुन लेना हर स्थिति में सही Tax Treatment की गारंटी नहीं देता।

1.9 अध्याय का अभ्यास

नीचे दिए गए सवालों से जाँचें कि आपने अध्याय की मुख्य बातें समझी हैं या नहीं।

सारांश: याद रखने योग्य बातें

- GST वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति पर लागू होने वाला अप्रत्यक्ष कर है।
- CGST, SGST, IGST और UTGST GST व्यवस्था के प्रमुख प्रकार हैं।
- GSTIN पंजीकृत व्यवसाय की पहचान के लिए इस्तेमाल होता है।
- GST Registration की जरूरत व्यवसाय और लागू कानूनी नियमों पर निर्भर करती है।
- ITC, GST Portal और Accounting Records को समझना सही GST Compliance के लिए महत्वपूर्ण है।

अध्याय 2: GST Registration किसे और कब कराना चाहिए?

GST Registration की जरूरत समझने से पहले दो बातें जानना जरूरी है: आपका Aggregate Turnover कितना है और आपके व्यवसाय पर कौन-से Registration Rules लागू होते हैं।

भारत में GST Registration से संबंधित मुख्य प्रावधान CGST Act की Sections 22, 23 और 24 में दिए गए हैं। सामान्य कारोबार सीमा के साथ कुछ विशेष परिस्थितियों में अलग नियम भी लागू होते हैं।

2.1 GST Registration की सामान्य Turnover Limits

सामान्य रूप से लागू सीमाएँ इस प्रकार समझें:

व्यवसाय की स्थिति	सामान्य सीमा
केवल वस्तुओं की आपूर्ति करने वाले पात्र व्यवसाय	कुछ राज्यों में ₹40 लाख तक
केवल वस्तुओं की आपूर्ति करने वाले पात्र व्यवसाय	कुछ राज्यों में ₹20 लाख तक
सेवाएँ देने वाले व्यवसाय	सामान्यतः ₹20 लाख
कुछ विशेष श्रेणी के राज्यों में सेवाएँ	कुछ मामलों में ₹10 लाख

ये सीमाएँ हर व्यवसाय पर बिना शर्त लागू नहीं होतीं। वस्तुओं और सेवाओं का मिश्रण, राज्य, विशेष छूट और Compulsory Registration के नियम परिणाम बदल सकते हैं।

उदाहरण: यदि कोई पात्र व्यवसाय केवल वस्तुओं की आपूर्ति करता है और उसके राज्य में ₹40 लाख की सीमा लागू होती है, तो सामान्य Turnover Threshold के आधार पर ₹40 लाख तक के कारोबार पर Registration की जरूरत न भी हो सकती है। लेकिन यदि कोई विशेष अनिवार्य Registration नियम लागू है, तो अलग निष्कर्ष निकल सकता है।

2.2 Aggregate Turnover क्या होता है?

GST Registration की सीमा जाँचते समय सबसे महत्वपूर्ण शब्द है Aggregate Turnover। इसका अर्थ केवल किसी एक दुकान की बिक्री नहीं है। इसकी गणना एक ही PAN के अंतर्गत पूरे भारत में होने वाली संबंधित आपूर्तियों को जोड़कर की जाती है।

इसमें सामान्यतः शामिल होते हैं:

- Taxable Sales — कर योग्य बिक्री।
- Exempt Supplies — GST से छूट प्राप्त आपूर्तियाँ।
- Export Supplies — निर्यात।
- Inter-State Supplies — राज्यों के बीच की आपूर्तियाँ।

इस गणना में CGST, SGST, IGST, UTGST और Compensation Cess को शामिल नहीं किया जाता। Reverse Charge के अधीन आने वाली Inward Supplies का मूल्य भी Aggregate Turnover में शामिल नहीं होता।

उदाहरण से समझें

मान लीजिए एक व्यवसाय के पूरे वित्त वर्ष के आँकड़े ये हैं:

विवरण	राशि
Taxable Sales	₹15,00,000
Exempt Sales	₹3,00,000
Export Supplies	₹2,00,000
कुल Aggregate Turnover	₹20,00,000

- इस उदाहरण में Aggregate Turnover ₹20 लाख होगा, न कि केवल ₹15 लाख।

ध्यान दें कि यह केवल गणना का उदाहरण है। Registration की जरूरत तय करने के लिए व्यवसाय की श्रेणी, राज्य और विशेष नियम भी जाँचने होंगे।

2.3 क्या अलग-अलग राज्यों की बिक्री जोड़नी होगी?

हाँ। एक ही PAN के अंतर्गत संबंधित सभी राज्यों की बिक्री को Aggregate Turnover की गणना में जोड़ा जाता है।

उदाहरण के लिए:

- दिल्ली की बिक्री: ₹12 लाख
- उत्तर प्रदेश की बिक्री: ₹6 लाख
- हरियाणा की बिक्री: ₹5 लाख
- कुल Aggregate Turnover = ₹23 लाख।

यहाँ ध्यान देने वाली बात है कि ₹23 लाख होने का अर्थ अपने-आप हर राज्य में एक ही निष्कर्ष नहीं है। यह देखना होगा कि किस राज्य से कर योग्य आपूर्ति की जाती है, वहाँ कौन-सी Registration सीमा लागू है और क्या अन्य विशेष नियम लागू होते हैं।

2.4 किन परिस्थितियों में Turnover Limit से पहले Registration जरूरी हो सकता है?

CGST Act की Section 24 में कुछ श्रेणियों के लिए Compulsory Registration के प्रावधान हैं। इनमें परिस्थितियों के अनुसार शामिल हो सकते हैं:

- कुछ प्रकार की Inter-State Taxable Supplies।
- Casual Taxable Persons।
- कुछ Reverse Charge परिस्थितियों में कर देने के लिए उत्तरदायी व्यक्ति।
- दूसरे कर योग्य व्यक्तियों की ओर से आपूर्ति करने वाले कुछ Agents।
- Input Service Distributor।
- कानून के अंतर्गत निर्धारित कुछ E-commerce Operators या उनके माध्यम से आपूर्ति करने वाले व्यक्ति।
- कुछ अन्य अधिसूचित श्रेणियाँ।

लेकिन इन सभी नियमों को बिना अपवाद के लागू नहीं समझना चाहिए। उदाहरण के लिए, कुछ छोटे सेवा प्रदाताओं और कुछ E-commerce Suppliers के लिए अधिसूचना के अंतर्गत

Anoop Gupta Books

End of free sample – buy the full book at onlineebook.in/books/hindi-practical-guides-combo.html

This file is a free sample. The complete ebook is sold at onlineebook.in.